

योग अवस्था ही परमात्म प्रेरणा प्राप्त करने का स्रोत

जबकि दैवीगुणों से सजना ही मनुष्य का लक्ष्य है तो योग की तार को न टूटने देना ही मनुष्य का कर्तव्य है। उसमें ही कल्याण है।

मनुष्य इस गुह्य भेद को जानते ही नहीं कि सूक्ष्म आत्मा सूक्ष्म परमात्मा के पास अपनी याद मन या बुद्धियोग ही के अत्यंत रास्ते से भेज सकती है।

हर कोई चाहता है कि हम परमात्म प्रेरणा प्राप्त करें। इसके लिए वो विभिन्न तरीके भी आजमाता है। किंतु योग अवस्था में रहना ही मानो परमात्मा की प्रेरणा का पूरा पालन करना है। आज सारी दुनिया बुद्धिमानों की राय, मत पर चलना चाहती है परंतु बुद्धिमानों की बुद्धि, बुद्धिदाता जो परमात्मा हैं उनकी राय पर चलने की तो एकमात्र युक्ति है ही योगयुक्त अवस्था को धारण करना। क्योंकि उस अवस्था में स्थित हुए बिना कोई मनुष्य परमात्मा की प्रेरणा ले ही नहीं सकता है। योग को दूसरे सरल शब्दों में 'याद' भी कहते हैं। परमात्मा की याद सदा बनी रहे, अर्थात् उनकी प्रेरणा व संकेत के अनुरूप अवस्था और व्यवस्था बनी रहे।

व्यक्त भाव में अर्थात् देहभान में तो माया पाँच विकारों का भी प्रवेश होता है, अतः पूर्ण निर्दोष बनने के लिए अपनी शांत और अंतर्मुखी अर्थात् योगयुक्त अवस्था में स्थित रहना चाहिए। क्योंकि परमपिता परमात्मा सूक्ष्म आकार में जिस देश के निवासी हैं उसमें है ही अंतर्मुखता और शांति का प्रभाव। जब मनुष्य आत्मा उस अव्यक्त अवस्था में टिककर वाणी बोलेंगे तो उसके वाक्य यथार्थ और सत्य ही निकलेंगे। और उसकी मानसिक अवस्था से मधु के समान मिठास अथवा कस्तुरी के समान खुशबू आयेगी। जबकि दैवीगुणों से सजना ही मनुष्य का लक्ष्य है तो योग की तार को न टूटने देना ही मनुष्य का कर्तव्य है। इसी योग युक्त अवस्था के रास्ते से ही तो मनुष्य आत्मा अव्यक्त मूर्त परमात्मा के अव्यक्त धाम की यात्रा कर सकेगी। सूक्ष्म को सूक्ष्म रीति से ही पाया जा सकता है। कर्मातीत अवस्था को कर्मातीत बनने के अभ्यास से ही तो प्राप्त किया जा सकता है। अतएव योगयुक्त अवस्था की टेव डालना ही सच्चे पुरुषार्थ का वास्तविक पुरुषार्थ है।

योगयुक्त अवस्था ही तो कवच है, क्योंकि ये माया के सभी वारों से बचाने का काम करता है। अब इस मायापुरी का वातावरण तो है ही तमोप्रधान। इस कारण योगयुक्त अवस्था में रहने से ही हर हालत में बचाव और कल्याण है। क्योंकि इस सर्वोत्तम अवस्था से ही मनुष्य आत्मा यहां ही मानो सूक्ष्म देश के जैसा वातावरण बना सकेगी। इसलिए सदा योगी को योग की कुटिया में गुप्त तपस्या करते ही रहना चाहिए।

योगयुक्त अवस्था ही तो कवच है

योगयुक्त अवस्था ही तो कवच है, क्योंकि ये माया के सभी वारों से बचाने का काम करता है। अब इस मायापुरी का वातावरण तो है ही तमोप्रधान। इस कारण योगयुक्त अवस्था में रहने से ही हर हालत में बचाव और कल्याण है। क्योंकि इस सर्वोत्तम अवस्था से ही मनुष्य आत्मा यहां ही मानो सूक्ष्म देश के जैसा वातावरण बना सकेगी। इसलिए सदा योगी को योग की कुटिया में गुप्त तपस्या करते ही रहना चाहिए।

योगाभ्यास से ही याद भेजना संभव है

इस अव्यक्त योगयुक्त अवस्था से ही मनुष्य परमपिता परमात्मा की ओर अपनी याद परमधाम तक भेज सकता है। क्योंकि जो जितना सूक्ष्म है, वह 'तंतु बिना तार' के रास्ते शीघ्र ही अव्यक्त स्वरूप परमात्मा के पास पहुंचता है। व्यक्त तो व्यक्त देश में ही प्रत्यक्ष होता है। परंतु सूक्ष्म में तो फिर भी सूक्ष्म ही प्रकट होता है। अब दुनिया वाले तो व्यक्ति (देह इत्यादि) के भान में आकर परमात्मा को अनेक व्यक्त यज्ञ, जप, तप, पूजा, पाठ आदि के तरीकों से पाने का अयथार्थ पुरुषार्थ करते हैं। क्योंकि वे इस गुह्य भेद को जानते ही नहीं कि सूक्ष्म आत्मा सूक्ष्म परमात्मा के पास अपनी याद मन या बुद्धियोग ही के अव्यक्त रास्ते से भेज सकती है। इस गुह्य युक्ति से अपरिचित होने के कारण अनेकों को उस अनोखे जीवन का अनुभव ही नहीं है जो कि योगावस्था अथवा अव्यक्तावस्था में स्थित होने वाली आत्माओं को अब परमपिता परमात्मा द्वारा अनुभव हो रहा है। अतः अब जो कोई भी योग अर्थात् अव्यक्त प्रभु की अव्यक्त याद गंवा बैठता है वह अपनी ही कमाई में घाटा डालता है। मानो कि वह अभी पूरा सजग नहीं हुआ है, या उसे अभी इस अविनाशी कमाई को खुमारी चढ़ी ही नहीं है। जैसे हमने बताया, मनुष्य आत्मा परमात्मा को पाने की जो विधि अपनाती है, वह स्थूल है। जबकि परमपिता परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं, तो हमें भी अपने वास्तविक, सूक्ष्म व अव्यक्त रूप को न सिर्फ जानना अपितु उस स्वरूप में स्थित रहकर सूक्ष्म परमात्मा से मिलन मनाना है। ये गुह्य रहस्य व विधि आज हम न अपनाने के कारण, न परमात्मा से मिलन मना सकते, न ही उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकते। योगयुक्त अवस्था ही इस गुह्य रहस्य, गुत्थी को सुलझाकर परमात्मा तक अपनी बात व भाव पहुंचा सकती है और उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकती है।

अशरीरी स्थिति में स्थित होने का अनुभव

हम सभी के दिल का यही संकल्प है कि हम सभी बाप के समान बन जायें। समान कौन बन सकता है? निराकार बाबा के समान हम अजन्मा तो नहीं बन सकते, लेकिन निराकार बाबा जैसे अशरीरी हैं ऐसे हम भी अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हैं। जब हम याद में बैठते हैं तो पहली कोशिश यही करते हैं कि जितना हो सके उतना अशरीरी स्थिति में स्थित रहें। मच्छर आया, मक्खी आई या कोई ने जरूरी काम से क्रॉस किया तो ऐसा नहीं है कि हमको पता ही नहीं पड़ेगा। लेकिन हम अपने लगन में ऐसे मग्न हैं जो हमको वो डिस्टर्ब नहीं करेगा। हम अपनी मस्ती में मस्त होंगे। जैसे स्थूल हाथ ऊपर-नीचे हुआ तो मन ऊपर-नीचे नहीं होगा। हाथ नीचे-ऊपर हुआ - यह तो शरीर का कर्म है लेकिन मन और बुद्धि हलचल में नहीं आये। जैसे आप कभी डीप विचारों में खोये होते हैं, उस समय खाना आपके सामने आया, आपने खाना शुरू कर दिया आपसे कोई पूछे कि भोजन में नमक ठीक है? लेकिन आप डीप विचारों में ऐसे मग्न हैं जो आपको नमक-मिर्च का टेस्ट खींचता ही नहीं है। ऐसे ही कोई बात जब विघ्न रूप हो जाती है तो भी उस बात में खोये-खोये रहेंगे। जब मनुष्य साधारण बातों में खो जाता है तो डिस्टर्बेंस नहीं होती। हम भी अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये, अशरीरी बाबा की याद में मग्न हो गये, लीन हो गये, खो गये



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

अभी मरजीवा जन्म लिया है। मरजीवा माना मरकर जीना। हम यह नहीं कहेंगे हम कलियुगी हैं। हम कहेंगे हम संगमयुगी हैं। यह हमारा नया जन्म है माना हम शूद्र जीवन से मर चुके और ब्राह्मण जीवन में नया जन्म है।

हुई हो, तो अपने को अवतार समझो। अवतार का अर्थ ही है जो अवतरित हुआ हो। जैसे मैं आत्मा परमधाम से आई, शरीर का आधार लिया, कर्म कर रही हूँ लेकिन मैं न्यारी। अपना लौकिक जन्म आदि सब भूल जाओ। अभी मरजीवा जन्म लिया है। मरजीवा माना मरकर जीना। हम यह नहीं कहेंगे हम कलियुगी हैं। हम कहेंगे हम संगमयुगी हैं। यह हमारा नया जन्म है माना हम शूद्र जीवन से मर चुके और ब्राह्मण जीवन में नया जन्म है।

तो हमको कोई भी बात हलचल में नहीं लायेगी। बात आई, पास हो गई हम फिर अपने में मग्न। जैसे कमल पुष्प रहता कीचड़, पानी में है लेकिन पानी और कीचड़ से न्यारा है। एक बूंद भी उसके ऊपर स्पर्श नहीं करती। ऐसे हम भी जब योग की स्थिति में स्थित हो जाते हैं तो कोई भी बाहर का, माया का, प्रकृति का प्रभाव मन-बुद्धि को अपने तरफ नहीं खींच सकता। अपने लगन में मग्न रहते हैं। इसको कहते हैं अशरीरी स्थिति का अनुभव।

दूसरी बात, जैसे बाबा अवतरित होता है, शरीर में प्रवेश होता है, साकार बनता है लेकिन है बिल्कुल न्यारा। इसी रीति बाबा हमको कहते हैं कि तुम आत्मा भी शरीर में अवतरित हुई हो, तो अपने को अवतार समझो। अवतार का अर्थ ही है जो अवतरित हुआ हो। जैसे मैं आत्मा परमधाम से आई, शरीर का आधार लिया, कर्म कर रही हूँ लेकिन मैं न्यारी। अपना लौकिक जन्म आदि सब भूल जाओ। अभी मरजीवा जन्म लिया है। मरजीवा माना मरकर जीना। हम यह नहीं कहेंगे हम कलियुगी हैं। हम कहेंगे हम संगमयुगी हैं। यह हमारा नया जन्म है माना हम शूद्र जीवन से मर चुके और ब्राह्मण जीवन में नया जन्म है।

इस नये जन्म में, जब हम ब्राह्मण बने तो हमने प्रतिज्ञा की कि ये तन-मन-धन-सम्बन्ध सब तेरा। तेरा कहने से न्यारे और प्यारे हो जाते और मेरा कहने से पिंजरे में फंस जाते हैं। तेरा कहने से पिंजरे का दरवाजा खुल जाता है।

मन में त्यर्थ संकल्प आने न दें



राजयोगिनी दादी जानकी जी

दिल का, मन का एक बार डायलॉग चला था - दिल है शरीर का भाग, मन है आत्मा का। दिल और मन- मन चाहता है मैं बाबा को याद करूं। दिल में कोई बात बैठी है, कुछ पिंच हुआ है तो अन्दर से पुरानी बात दिल से भुली नहीं है। मनमनाभवः नहीं हो सकते। तो दिल चाहता है मैं बाबा को याद करूं बाकी सबसे वैराग्य। परन्तु मन अपनी चंचलता छोड़ता नहीं है। मन को हजार आंखें हैं, दूर-दूर देखता है। आंखें यहाँ खुली हैं मन और कहीं देख रहा है। लेकिन दिल साफ हो, दिल में लगन ऐसी हो जो मन हमारे हाथ में हो। जब चाहूँ- शांत हो जाऊँ। व्यर्थ सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है। कई अपने लिए भी व्यर्थ सोचते हैं। व्यर्थ न सोचें, राइट सोचें। दिल में कोई भी बात हो तो उसे भुला दें। दिल में रखेंगे तो वह नुकसान करती रहेगी। ड्रामा का ज्ञान अच्छा मिला हुआ है कोई ने धोखा दिया, कुछ किया उसे भुला दें। किसी ने कुछ कहा या हुआ भी तो चलो पास्ट का हिसाब था या प्रेजेन्ट इसने बोलकर सावधान किया। आगे के लिए खबरदार, होशियार रहेंगे। भोले-भाले नहीं रहेंगे। सम्बन्ध में आते हुए न्यारे-प्यारे रहेंगे, बैलेन्स रखेंगे। जो बात सामने आती है- सिखाने के लिए आती है। हर आत्मा का पार्ट है। जो हुआ अच्छा हुआ। सोचते हैं तो कर्मबन्धन बढ़ाते हैं। पुराने

सम्बन्धियों के लिए तो सोचना बंद कर दिया लेकिन अभी यहाँ किसी के प्रति लगाव-झुकाव शुरू हुआ, सोचने व बोलने में आया तो कर्मबन्धन शुरू हुआ। इसमें खबरदार रहो। लम्बी खजूर है ऊपर जा रहे हैं, सावधानी है। कोई बहुत कोमल दिल वाले हैं, कोई कठोर दिल वाले हैं, यह दोनों नुकसानकारक हैं। कोमल दिल वाले रहम वश लगाव में जायेंगे कठोर दिल वाले किसी को माफ नहीं करेंगे। न कठोर बनना, न कोमल बनना। रहमदिल हो, लेकिन कोमल दिल न हो। मजबूत हों, कठोर न हों। ज्ञान से ऐसी स्थिति बना दें। फिर सब ठीक हो जायेगा। मन्सा सेवा करनी है तो मन में व्यर्थ संकल्प आने न दें क्या होगा, कैसे होगा, नहीं। मेरा मन, वृत्ति इतने साफ हों जो बाबा के पास रहूँ और अनेक आत्मार्थों भी बाबा के पास का अनुभव करें- इससे मायाजीत बनने की शक्ति मिलती है। साथ का अनुभव बहुत काम करता है। हम सदा बाबा के साथ रहें और दूसरे बाबा के पास आयें, दूर होने के कारण बुद्धि भटकती है, पास होने से बुद्धि शांत रहती है। तो हर्षित रहने के लिए ज्ञान, योग, धारणा तीनों अच्छी तरह से मेरे पास हों। ज्ञान हो योग कम हो, योग हो धारणा में कमी हो तो हर्षित नहीं रह सकते।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

आप सबको देख प्यारे बाबा का एक बोल याद आता। बाबा कहते तुम बच्चों को सच्ची-सच्ची गीता सबको सुनानी है, तुम घर-घर में सच्ची गीता पाठशाला खोलो। गीता के भगवान को सिद्ध करो, इसी पर ही तुम्हारी विजय होनी है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम से मनुष्यों का इतना ध्यान नहीं जाता लेकिन जब सुनते सच्ची गीता पाठशाला तो नाम सुनने से ही अन्दर आता चलकर देखें यहाँ क्या सुनाते हैं।

आप सब सच्ची गीता पाठशाला के निमित्त बने हुए सच्चे सेवाधारी हो। जो निमित्त बनते उनकी बाबा अपरमअपार महिमा गाता। ब्रह्माकुमारियों ने तो अपनी जीवन सेवा के लिए अर्पित की, उन्हों का महान भाग्य है लेकिन उनसे भी अधिक भाग्य आपका है। उन्होंने सबकुछ त्याग कर सेवाकेन्द्र बनाया है। शो केस के सैमुल आप हैं। शो केस में हमेशा सैमुल को रखा जाता क्योंकि आप ही दूसरों के सामने बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष करने वाले हो

इसलिए आपकी बहुत वैल्यू है। तुम्हारे लिए यह पाठ है कि रहना है प्रवृत्ति में लेकिन पर वृत्ति में रहना है। आपको सबके साथ में रहते नष्टोमोहा का पाठ पढ़ना है। यह सैमुल आप लोगों का है। ब्रह्माकुमारियों के आगे कोई भी पेपर आये तो नो फिकर क्योंकि वह बाबा की सर्विस पर हैं, परन्तु आपके आगे चार पेपर सदा ही खड़े हैं। कहा जाता है ये ज्ञान इतनी ऊंची मंजिल

गृहस्थी है उसके लिए धन्धा भी जरूर करना पड़ता, आज धन्धा अच्छा चलता, कल नहीं चलता। कई प्रकार के पेपर आपके सामने आते, अज्ञान में तो मनुष्य को धन्धे में अगर घाटा जो जाये तो शॉक आ जाता परन्तु ज्ञानवान कहते यह तो ड्रामा है। फिकरातों के बीच रहते बेफिकर रहना। निरसंकल्प रहना, ये सैमुल आप हैं। जो कमाते हुए भी अनासक्त रहते वही सैमुल बनते

सबके साथ रहते, सब पेपर सामने होते नष्टोमोहा रहें...

है, चढ़े तो चाखे ज्ञान रस, गिरे तो चकनाचूर... यह है लम्बी खजूर। यह कहावत प्रवृत्ति में रहने वालों के लिए है। चढ़ना भी जरूर है, रस पीना भी जरूर है लेकिन चढ़ें तो कैसे? क्योंकि इधर है प्रवृत्ति, उधर है समाज, इधर है धन्धा और उधर है बाबा। यह सब पेपर आपके सामने हैं।

प्रवृत्ति वालों को अनेक चिंतायें रहती, आज बेटी बड़ी हुई है, शादी करनी होगी। यह करना होगा। इसके लिए धन्धा करें, पैसा इकट्ठा करें। चिन्ताओं की टोकरी सदैव सिर पर रहती। बहू-बेटी में ममता हो जाती। ऐसे सबके साथ रहते हुए, सब पेपर सामने होते हुए नष्टोमोहा रहें। यह सैमुल आप सबका है। आपको बुद्धि में अगर रहता बाबा यह प्रवृत्ति तेरी है तो सदा बेफिकर रहते। ऐसे कमल फूल का प्रैक्टिकल मिसाल आप लोग हैं।

समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगा, कभी कहेगा बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेगी ही।

हैं। आज का धन्धा-धोरी भी क्या है? आज नौकरी कैसी है, कल कैसी है। यह अप-डाउन रोज होता। परन्तु यह सब

होते भी नथिंगन्यू। अज्ञानियों में टेशन रहता और हम कहते तो नेटेशन बट अटेन्शन। समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगा, कभी कहेगा बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेगी ही। इन सबको पार करते हुए चलना यह है आप सबका सैमुल। अब आओ ब्राह्मणों की दुनिया में, यहाँ भी कई पेपर आते। जायेंगे सर्विस करने, सर्विस अच्छी हुई तो खुशी होगी। नहीं हुई तो दिलशिकस्त होंगे। कभी-कभी आपस में भी मित्र के बजाय परममित्र बन जाते। यह संस्कारों का भी बहुत कड़ा पेपर है। किसी को मित्र बनाना तो सहज है परन्तु परममित्र को मित्र बनाना यही मीठी-मीठी पढ़ाई है।